उत्तराखण्ड में अनुसूचित जातियों के विकास में शिल्पकार नेताओं का योगदान

***कु0 नीरज आर्या**

उत्तर प्रदेश के 13 हिमालयी जिलों को अलग करके 9 नवम्बर 2000 को भारतीय गणतंत्र के 27वें और हिमालयी राज्यों में 11वें राज्य के रूप में उत्तरांचल राज्य का गठन किया गया। 1 जनवरी, 2007 से इसका नाम उत्तराखण्ड कर दिया गया। मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र का षीर्शक उत्तराखण्ड में अनुसूचित जातियों के विकास में शिल्पकार नेताओं का योगदान है।

अनुसूचित जातियों की कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग देश के 5 राज्यों उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा में हैं। उत्तराखण्ड राज्य में 19 प्रतिशत है। उत्तराखण्ड में अनुसूचित जातियों का सम्बन्ध किसी न किसी शिल्प से सम्बन्धित है। इसलिए इस जाति को 'शिल्पकार' से सम्बोधित किया जाता है। 'शिल्पकार' द्वारा हल जोतना, भवन निर्माण, लोहे के औजार बनाना, पीतल व ताँवे के बर्तन व मूर्तियाँ बनाना, बढ़ई का कार्य, कपड़े बनाना व सिलना, टोकरियां आदि बनाने के कार्य किये जाते हैं तथा उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति को जीवित रखने वाली जातियाँ भी अनुसूचित जाति की है।[1]

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है। इसके संरचनात्मक तथ्यों से सम्बद्ध तथ्यों का एकत्रीकरण, द्वितीयक स्रोतों के रूप में सम्बन्धित पुस्तकों, शोध ग्रन्थ आदि का प्रयोग कर विषय की विभिन्न पहलुओं को पुष्ट किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्यतः ऐतिहासिक, वर्णात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

1– समाज में जातिवाद, अस्पृश्यता, छुआछूत आदि को समाप्त करने प्रयास।

2– समाज में जातिवाद, अस्पृश्यता, छुआछूत से पीड़ित व्यक्तियों को जागरूक करना।

अनुसूचित जाति के विकास में किये गये प्रयास–

अनुसूचित जाति के लिए अछूत या हरिजन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उच्च जातियों एवं निम्न जातियों के मध्य भेदभाव को मिटाने के लिए महात्मा गांधी ने निम्न जाति के लोगों को 'हरिजन' शब्द से पुकारा जा सकता था। जिसका अर्थ "ईश्वर की संतान" है। इस उद्देश्य की सफलता के लिए महात्मा गांधी ने हरिजन नाम की पत्रिका का सम्पादन भी किया जिसका उद्देश्य अनुसूचित जातियों की समस्याओं को उजागर करना था। अनुसूचित जातियों के लिए कई शब्दों का प्रयोग किया होता आया है। जिसमें 'दलित वर्ग' शब्द का प्रयोग पहली बार डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने किया था।[2]

उत्तराखण्ड में सर्वप्रथम सन् 1905 में अल्मोड़ा में श्री राय बहादुर हरि प्रसाद टम्टा जी ने 'टम्टा सुधार सभा' की स्थापना की जो कालान्तर में "शिल्पकार सभा" के नाम से विख्यात हुई। महात्मा गांधी और डॉ0 अम्बेडकर से प्रभावित होकर ही कुमाऊँ के शिल्पकार नेताओं ने अपनी जाति के उत्थान के लिए कार्य करना प्रारम्भ किया। जिसमें राय बहादुर हरि प्रसाद टम्टा और खुशी राम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अनेक अनुसूचित जाति के लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन गांधी जी के प्रभाव के कारण भाग लिया।[3]

*शोध छात्रा, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

खुशी राम आर्य ने 17 अगस्त, 1913 'श्रावणी पूर्णिमा' को लाला लाजपत राय के नेतृत्व में सैकड़ों दलितों के साथ स 'सुनकिया' रामगढ़ नैनीताल में यज्ञ, हवन कर जनेऊ धारण किया व उसी दिन 'दलित शुद्धिकरण सभा' का गठन किया गया। जो बाद में 'शिल्पकार सुधारिणी सभा' के नाम से प्रसिद्ध हुई। कुमाऊँ में शिल्पकारों के सुधार में 'आर्य समाज' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लाला लाजपत राय ने इस सुधार कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसलिए बहुत से शिल्पकार 'आर्य' भी कहे जाते हैं। नवम्बर 1932 में अल्मोड़ा में कुर्मांचल समाज सम्मेलन हुआ जिसमें 'अछूत कोई नहीं' के नारे लगे और सवर्णों का एक बड़ा दल गोविन्द बल्लभ पंत के नेतृत्व में टम्टाओं के नौलों (बावड़ी) से पानी पीने लगे।[4]

शिल्पकार नेताओं का योगदान–

कुमाऊँ में शिल्पकारों की स्थिति सुधारने में स्वयं अनुसूचित जाति के नेताओं का भी बहुत बड़ा योगदान रहा। जो कि निम्न प्रकार से हैं।

हरि प्रसाद टम्टा– हरि प्रसाद टम्टा इनका जन्म 26 अगस्त, 1888 को अल्मोड़ा में हुआ। उत्तराखण्ड के दलित शोषित समाज के हरिप्रसाद टम्टा ने दलित समाज को सर्वप्रथम 'शिल्पकार' नाम दिया। उर्दू और फारसी में विशेष योग्यता के कारण इन्हें मुंशी की उपाधि मिली। 1905 में इन्होंने टम्टा सुधार सभा का गठन किया जो बाद में शिल्पकार सभा के नाम से जानी गयी। 1934 में सामाजिक चेतना के उद्देश्य से अल्मोड़ा से 'समता' साप्ताहिक का प्रकाशन किया। शिल्पकारों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के लिए इन्होंने सफल प्रयास किये और शिल्पकारों को यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर उनमें आत्मविश्वास बढ़ाने के कार्यक्रम भी चलाए। सन् 1945 में ये अल्मोड़ा नगरपालिका के चेयरमैन चुने गये।

खुशी राम आर्य– इनका जन्म 13 दिसम्बर, 1886 को दौलिया हल्दूचौड़ जिला नैनाताल में हुआ, वे आर्य समाजी विचारधारा के व्यक्ति थे। उन्होंने दलितों में व्याप्त कुप्रथाओं जैसे बाल विवाह, मदिरा पान, छुआछूत आदि की समाप्ति के लिए सम्पूर्ण कुमाऊँ क्षेत्र में जागरूकता फैलाई। शिल्पकार सुधारिणी सभा का गठन कर शिल्प विद्यालयों का संचालन किया। दलितों को शिल्पकार नाम प्रदान करने में वे अग्रणी रहे। सन् 1946 में वे कांग्रेस पार्टी की तरफ से विधान सभा के लिए चुने गये और 1967 तक विधानसभा के सदस्य रहे। 5 मई में 1979 को उनका निधन हो गया।[5]

जयानन्द भारती– इनका जन्म 17 अक्टूबर, 1881 में पौढ़ी गढ़वाल जिले के अरकंडई गांव में हुआ था। 30 वर्ष की अवस्था में आर्य समाज की पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' छुआछूत के प्रति उन्हें जागरूक किया और उन्होंने आर्य समाज की दीक्षा ली। दीक्षा के बाद उनका नाम 'जयानन्द आर्य' 'पथिक' हो गया। गढ़वाल में इन्होंने छुआछूत और डोला पालकी जैसे कुप्रथा के विरूद्ध आवाज उठाई और लम्बे संघर्श के बाद इस कुप्रथा को समाप्त करने में सफल हुए। इस आन्दोलन में उन्हें गांधी जी का भी समर्थन प्राप्त हुआ।[6]

बलदेव आर्य– इनका जन्म 1912 में पौढ़ी के उमथ गांव हुआ था। ये स्वाधीनता संग्राम सेनानी, लोकप्रिय जनप्रतिनिधि, राजनेता, समाजसेवी, हरिजनोत्थान को समर्पित तथा गांधीवादी विचारक थे। सर्वप्रथम लम्बी अवधि तक विधायक और मंत्री पद को सुशोभित करने वाले ये उत्तराखण्ड के पहले विधायक थे। 1950 में ये सर्वप्रथम प्रोविजनल पार्लियामेंट के सदस्य मनोनीत हुए। इसके बाद वे 1952–1985 तक विधानसभा और 1968–1974 तक विधान परिषद् के सदस्य रहे। प्रायः सभी बार ये मंत्रीमण्डल के भी सदस्य रहे। कई वर्षों तक अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष रहे। 1995 में इनका देहावसान हो गया।[7]

बी0 आर0 टम्टा– जनपद बागेश्वर निवासी आई0ए0एस0 ऑफिसर बी0 आर0 टम्टा दिल्ली के कमिश्नर रहे हैं। इन्हें उत्तराखण्ड गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया है।[8]

श्रीमती लक्ष्मी देवी टम्टा– इनका जन्म 1911 में अल्मोड़ा में हुआ था। वे स्नातक डिग्री लेने वाली उत्तराखण्ड की पहली दलित महिला हैं। 1935 में उन्होनें प्रदेश के सबसे पुराने साप्तिाहिक समाचार पत्रों में से एक अल्मोड़ा प्रकाशित 'समता'

(साप्ताहिक) के सम्पादन का दायित्व सभांला और इस के माध्यम से शिल्पकार वर्ग की दयनीय स्थिति की ओर समाज और सरकार का ध्यान आकृष्ट किया।[9]

मे0 जनरल कु0 माया टम्टा– अल्मोड़ा निवासी कु0 माया टम्टा भारत की ही नहीं विश्व की पहली महिला मेजर जनरल हैं। इनके पिता भी सेना में ब्रिगेडियर थे। अतः इनकी शिक्षा–दीक्षा पूणे में हुई थी। ये ए0 एम0 सी0 की मिलेट्री नर्सिंग सर्विस से रिटायर हुई।[10]

उपरोक्त नेताओं के सफल प्रयासों से अनुसूचित जातियों का उत्थान किया गया जिससे उन्हें समाज में सम्मान मिला।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इन महान लोगों के प्रयासों से ही उत्तराखण्ड के शिल्पकारों को पहली बार 1935 में पुलिस में भर्ती किया गया तथा 1941 से अनुसूचित जाति के लोगों को सेना में भर्ती किया जाने लगा था। स्वतंत्रता के पश्चात् संवैधानिक अधिकारों के प्रयोग से अनुसूचित जाति की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक स्थितियों में सुधार हुआ।

आज भी समाज में जातिवाद, अस्पृश्यता, ऊँच–नीच की भावना विद्यमान है। समाज में शिक्षित लोगों की अधिकता होने पर भी ऐसी भावनाओं का अन्त नहीं हो पा रहा है। ऐसी जातिवादी व रूढ़िवादी भावनाओं का अन्त करने के लिए समाज के शिक्षित तथा जागरूक वर्ग को आगे आना चाहिए ताकि जातिवाद, अस्पृश्यता, ऊँच–नीच की भावना का अन्त किया जा सके।

सन्दर्भ सूची–

1– बाल्मीकि, मनोज कुमार, शोध ग्रन्थ (अनुसूचित जाति में सामाजिक गतिशीलता), 2013, पृ0 1

2– बाल्मीकि, मनोज कुमार, वहीं पृ0 2

3– बाल्मीकि, मनोज कुमार, वही पृ0 13

4– बाल्मीकि, मनोज कुमार, वही पृ0 20

5– त्रिपाठी केसरी, उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, नन्दन बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण 2011–12, पृ0 288

6– उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, पृ0 289

7– वही, पृ0 273

8– उत्तराखण्ड एक सार्थक परिचय, ए0 बी0 डी0 पब्लिकेशन, मेरठ, 2015,पृ0 146

9– उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, पृ0 297

10– उत्तराखण्ड एक सार्थक परिचय, पृ0 146